देकार्त की पद्धति एवं असंदिग्ध ज्ञान
(Cartesian Method & Certain Knowledge)

गणित → असंदिग्ध ज्ञान → आत्मा।
दर्शन → संदेह पद्धति

इंद्रिया ×
शारीरिक ×
वैज्ञानिक ×
गणितीय ×
मत सिद्धांत ×

"मैं संदेह करता हूँ।" ×
आत्मा में संदेह नहीं
मत: ↓
"मैं" = आत्मा → असंदिग्ध ज्ञान

भूमिका - फ्रेंच बुद्धिवादी दार्शनिक देकार्त
लैटिन नाम - कार्टेशियस (Cartesius)
- पद्धति - Cartesian Method
- दर्शन - Cartesian Philosophy.

प्रभाव - गणित से प्रभावित

उद्देश्य - गणित के समान ही दर्शन के क्षेत्र में निश्चित एवं असंदिग्ध ज्ञान की प्राप्ति करना।

गणितीय पद्धति - गणित में स्वयंसिद्ध सत्यों को मूलाधार के रूप में स्थापित किया जाता है फिर निगमनात्मक पद्धति से उनकी सहायता से अन्य निष्कर्ष को निगमित किया जाता है। परिणामस्वरूप निष्कर्षों में अनिवार्यता एवं सार्वभौमता होती है। देकार्त ने भी अपनी पद्धति के आरंभ में स्वयंसिद्ध सत्यों की स्थापना का प्रयास किया है। तत्पश्चात निगमनात्मक पद्धति कि मदद से अन्य की सत्ता सिद्ध की है।

चार दार्शनिक नियम - देकार्त असंदिग्ध ज्ञान प्राप्ति के क्रम में 4 दार्शनिक नियम बनाते हैं:-

1) जब तक किसी का स्पष्ट एवं परिस्पष्ट (clear & distinct) ज्ञान प्राप्त न हो जाये तब तक उसकी सत्यता को स्वीकार नहीं किया जायेगा (संदेह पद्धति का मूल इसी में विद्यमान है)।

2) समस्या को सरल से सरलतम टुकड़े में विभाजित किया जायेगा (विश्लेषणात्मक पद्धति)।

3) सरलतम पक्ष से समस्या का समाधान आरंभ किया जायेगा और क्रमिक रूप से जटिल पक्षों की ओर बढ़ा जायेगा।

4) निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व पूर्ण सर्वेक्षण किया जायेगा ताकि कोई भी पक्ष शेष न रह जाये।

मान्यता - बुद्धि में अनिवार्य एवं सार्वभौम ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता है। बुद्धि यथार्थ और अयथार्थ ज्ञान में भेद कर सकती है।

संदेह पद्धति - डेकार्ट ने दर्शन के क्षेत्र में निश्चित एवं असंदिग्ध ज्ञान की प्राप्ति हेतु संदेह विधि का प्रतिपादन किया है। संदेह विधि के क्रियान्वयन के क्रम में वे एक सिरे से सभी वस्तुओं, घटनाओं, मत एवं सिद्धांतों आदि पर संदेह करते हैं। देकार्ट कहते हैं कि जिसपर तर्कतः संदेह करना असंभव होगा वह असंदिग्ध नहीं माना जायेगा। जहाँ संदेह करने पर व्याघात (contradiction) उत्पन्न होगा वहीं पर हमें रुकना होगा तथा उसे असंदिग्ध ज्ञान के रूप में स्वीकार करना होगा।

किस पर संदेह ? - 1) इंद्रिय ज्ञान पर संदेह संभव है क्योंकि इंद्रिया हमें कभी-2 गलत ज्ञान प्रदान करती हैं।
Ex- रस्सी में सर्प का ज्ञान।

2) शारीरिक क्रिया पर संदेह संभव है क्योंकि स्वप्न में हम स्वप्न के अनुसार कोई शारीरिक क्रिया नहीं करते फिर भी उस समय ऐसा प्रतीत होता है।

3) वैज्ञानिक ज्ञान पर संदेह संभव है क्योंकि भविष्य में उनके असत्य होने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

Scanned with CamScanner

4) गणितीय ज्ञान पर भी संदेह संभव है क्योंकि हो सकता है कि हम अभी किसी भ्रांति के वश में हो और परिणामस्वरूप एक निश्चित दिशा में सोचने पर विवश हो।

5) परम्परागत विश्वासों एवं मतों पर भी संदेह किया जा सकता है।

कुल मिलाकर - प्रत्येक वस्तु, घटना, सिद्धांत मत आदि पर संदेह किया जा सकता है।

- संदेह करना एक चेतन प्रक्रिया है। संदेह विचार का एक रूप है।

- चेतन प्रक्रिया (विचार) हेतु चेतन तत्व का होना आवश्यक है। (विचारक)

इस प्रकार चेतन प्रक्रिया से (विचार प्रक्रिया) चेतन तत्व (विचारक या संदेहकर्ता) का अस्तित्व निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है। इसे ही देकार्त अपनी भाषा में "Cogito Ergo Sum" कहते हैं।

Cogito ↓ Ergo ↓ Sum ↓

"मैं सोचता हूँ. इसीलिए मैं हूँ"

देकार्त का कथन - "मेरा संदेह सही हो सकता है, मेरा संदेह गलत हो सकता है परंतु मैं इस बात पर संदेह नहीं कर सकता कि मैं संदेह कर रहा हूँ। अगर मैं अपने ऊपर भी संदेह करूँ तो भी संदेहकर्ता के रूप में मेरा अस्तित्व सिद्ध होता है।

संदेह विधि का स्पष्टीकरण -

1) संदेह देकार्त के दर्शन का आरंभ है अंत नहीं है।
2) विधि है निष्कर्ष नहीं है।
3) तार्किक है मनोवैज्ञानिक नहीं है।
4) साधन है साध्य नहीं है। (ह्यूम के संशयवाद से तुलना)

Scanned with CamScanner

स्पष्ट है कि केवल आरंभ के दृष्टिकोण से डेकार्ट का दर्शन संदेहवादी है अपने अंतिम रूप में उसे संदेहवादी नहीं कहा जा सकता। अतः निश्चित और असंदिग्ध ज्ञान प्राप्ति का यहाँ दावा किया गया है।

Cogito Ergo Sum स्पष्टीकरण –

1) यहाँ "Ergo" शब्द अनिवार्य सम्बंध का प्रतीक है। यह सोचने और सोचने वाले में अनिवार्य सम्बंध को बताता है।

2) Cogito Ergo Sum की सत्यता स्पष्ट एवं परिस्पष्ट है। डेकार्ट यहीं से सत्यता की कसौटी निकालते हैं।

3) Cogito Ergo Sum का ज्ञान अंतर्सूझ या अंतर्प्रज्ञात्मक (Intuitive Knowledge) है।

4) इससे अपनी आत्मा की सिद्धी होती है।

5) संशयविधि अपनी आत्मा के असंदिग्ध ज्ञान के उपरांत समाप्त हो जाती है।

6) संशयविधि का अवसान/समापन - आत्मा के निर्विवाद असंदिग्ध अस्तित्व के उद्घाटन में होता है।

अन्वेषणीय तथ्य –

ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण से सर्वप्रथम आत्मा का ज्ञान होता है तत्पश्चात निगमनात्मक पद्धति से ईश्वर की सत्ता का असंदिग्ध ज्ञान प्राप्त होता है। पुनः ईश्वर की सत्यनिष्ठता के आधार पर जगत के ज्ञान की वास्तविकता को सिद्ध किया जाता है।

संशय विधि → आत्मा का असंदिग्ध ज्ञान → निगमनात्मक पद्धति → ईश्वर का असंदिग्ध ज्ञान → ईश्वर की सत्यनिष्ठता → ईश्वर धोखेबाज नहीं हो सकता → जगत का ज्ञान और उसकी सत्ता

Scanned with CamScanner

तत्वमीमांसीय दृष्टिकोण से सर्वप्रथम ईश्वर का अस्तित्व, तत्पश्चात् आत्मा की सत्ता और फिर जगत की सत्ता।

आलोचना + महत्व (Printed Notes)

- देकार्त को आधुनिक पश्चात्य दर्शन का पिता कहा जाता है।

देकार्त - ईसाई धर्म का प्रभाव था।

ईसाई धर्म में ट्रिनिटि का Concept था।

↓

3 तत्व -

ईश्वर, आत्मा, जगत

ईश्वर

M B.

Scanned with CamScanner